1

श्रीगणेशाय नमः विन्द्रावन विरहनी तजे पै श्री
कृष्ण द्वारिका छाये १ सखि सावन की मास आई सखि
या हि डोला झूलैं राधे जी बाट निहारैं अब जदून आय हरि
आये घिर हा विते गो वे ग हमरे हिया बिच साले० औ दो घुमरि
घन गाजैं य नेह ओर दामिनि दमकै दरसन को अंखिया
तरसे हे रो राधिका रानी रोइ रोइ सगु नू जल वरसै भिनुकि
न चयन नाहि भावै पलंग नीद नहि आवै ॥२॥ भादौं स र द
...

भारह भा॰

स भा वा जो कीन सो आगे आगा कुंवरी लड़ लिखिल [illegible] आ शा कुंव
कैलि हिल ग्रहः दाधा ॥८॥ चरनै ग्रहः वालु पसे॰लौ चंपा
॥२॥ फूली वन बेली नाभी नप छत्र धाडे अ सरु न आपे हहि गा ॥२॥
डे॥९॥ बैसा ष विरहि नी बावरी आवे सा मपिन आ ग्रहि
हो२ च॰ औ च॰ नी स म्रै र जवा ला जों [illegible] से हरि री अँ शाहि सम्रै प्रति
लिखी जै॥१०॥ ये छै ग्रहः जेहि जवानी जो ला गि है सो जानी

श्री [illegible] श्री कृष्ण राम

पाजै ॥३॥ कार्तिक का ... न हिम्मा पे नैमञ्ज पै मव्याहि पर का
पे स्याम को अरसी न या हि पे थ जकोइ अवर नारहि पे ॥४॥
अगहन मघा द कै ग भू टे दि लासा दै ने दिन स्या पन्नी उर
जी लेई रषिका रानी ॥५॥ पुसे मे आइ पा तो लु निवै दराफ
गपि पा ती मूं जी मे रवि मा ला सु नि पो गनि पा मोर हला ६॥
को इ मा वे मन का मारै र नी बि घ म तन नारै जव हि
नाति का सा धै तव पोग की गति पा नै ॥७॥ फागुन को फ

बारह

3

क्रोद्दरह प्रहः खोलौं मोह नाव नाहित डोलै ॥११॥ ग्रासा

ऽ मे ग्रासा तजि कै केवल चरन हरि भजि कै बोसौ ग्रपाने

दिल मे तरासन हरि हरभजन ल्यौ ॥१२॥ बारह मास सम ॥३॥

॥३॥ पूर्भ्र म नस्त्र मं मू प्रान श्री मते रसा नु सा प्रनम

सो कृष्ण नद्र के प्र र पूज्त क्रौ दरके पाल्ल र प्रं रामा नुजं

सी लो भर तं भरता न जं स्रवी वं नापुल न्य्यु दण भामि प्रनः

पुनः ॥१॥ रामान

4